Sem. 4
MJ-7

नागरी लिपि में सुधार

विश्व की प्रायः सभी लिपियों की भाँति देवनागरी लिपि भी पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं है। नागरी लिपि में लेखन या टंकण की दृष्टि से भाषा-वैज्ञानिकों ने अनेक कमियाँ दिखलायी हैं। अतः यहाँ सुधार की संभावना हमेशा बनी हुई है। पहली बात कि एक वैज्ञानिक लिपि को वर्णात्मक होना चाहिए, अर्थात् भाषा में प्रयुक्त हर व्यंजन तथा हर स्वर के लिए अलग-अलग लिपि-चिह्न होने चाहिए। किन्तु नागरी लिपि मुख्यतः अक्षरात्मक है, जो उसकी प्रकृति है और उसे कुछ परिवर्तनों के द्वारा सुधारना कठिन है। फिर भी, नागरी लिपि में सुधार के प्रयास स्वतंत्रता-पूर्व से होते रहे हैं।

नागरी लिपि में सुधार के लिए सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन में 1935 ई० में काका कालेलकर के संयोजकत्व में एक समिति गठित हुई, जिसने चौदह सुझावों के साथ रिपोर्ट पेश की। फिर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की ओर से भी सुधार के सुझाव मांगे गए। इन सुझावों में श्रीनिवास एवं डॉ० गोरखप्रसाद द्वारा सुझाये सुधारों को सराहा गया। बाद में, उत्तर प्रदेश सरकार ने आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में एक सुधार समिति का गठन किया, जिसने 1949 ई० में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रकार के सुझाव दिये। लिपि-सुधार के संबंध में एक और प्रयास उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा भी किया गया।

उपर्युक्त सभी समितियों या व्यक्तियों के सुधार-संबंधी सुझावों को प्रायः जन-समर्थन नहीं मिल पाया और नागरी लिपि के प्रयोक्ताओं ने सारे सुझावों को अनसुना कर दिया। फिर भी, नागरी लिपि को अधिक वैज्ञानिक बनाने के उद्देश्य से कुछ व्यावहारिक सुधार लाए

जा सकते हैं, जो इस प्रकार हैं। —

(1) चूँकि वैज्ञानिकता के लिए एक ध्वनि - एक चिह्न का प्रयोग होना चाहिए, किन्तु नागरी लिपि में कुछ ध्वनियों के लिए दो-दो चिह्न प्रचलित हैं, उन्हें एक में सीमित करना चाहिए। र लिपि सभी प्रचलित चिह्नों — प्र, र्प, ट्र, पृ - की जगह प्रयुक्त हो, जैसे प्र, र्प, ट्र, प्रि आदि। इसी तरह अ-अ्र के लिए अ, झ-झ के लिए झ, ण-रा के लिए ण, त्र-त्र के लिए त्र, ज्ञ-ज्ञ के लिए ज्ञ, क्श-क्ष के लिए क्श मानना उचित होगा।

(2) एक वैज्ञानिक लिपि में सभी ध्वनियों के लिए अलग चिह्न होने चाहिए। चूँकि हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अन्य कई भाषाओं का भी लेखन देवनागरी में होता है। अतः उन ध्वनियों के लिए भी चिह्नों को शामिल किया जाना चाहिए। जैसे दन्तोष्ठ्य व के चिह्न रूप में व़ को शामिल किया जा सकता है।

(3) उच्चारण-क्रम से अक्षर-लेखन ही वैज्ञानिक विधि है। नागरी लिपि में उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, इ आदि की मात्राओं का प्रयोग दायीं ओर न होकर ऊपर-नीचे या बायीं ओर प्रयुक्त होती है। जैसे इ मात्रा का प्रयोग बायीं ओर कभी एक या दो या तीन स्थान पहले होता है — कि, प्रिय, चन्द्रिका आदि। इन्हें दायीं ओर ही रखने का विकल्प स्वीकार किया जा सकता है।

(4) एक वैज्ञानिक लिपि में चिह्नों की समानता के कारण भ्रम की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। नागरी लिपि में ख - रव, रा - रा में यह भ्रम है, जिसे ख के निचले हिस्से को मिलाकर और रा की जगह ण को मानकर दूर किया जा सकता है। इसी तरह ध-घ और भ-म के भ्रम को ध और भ को घुंडीदार बनाकर दूर किया जा सकता है।

(5) नागरी लिपि में श्र, क्ष, त्र, ज्ञ, द्य जैसे संयुक्त व्यंजनों का स्वतंत्र अक्षर के रूप में प्रचलन है। इन्हें छोड़कर श्र, क्श जैसे रूप लिखे जाने चाहिए।

(6) नागरी लिपि के लेखन में प्रायः एकरूपता नहीं दिखती। जैसे शिरोरेखा, अधोबिन्दु एवं अनुस्वार के प्रयोग में एकरूपता नहीं है — कमल - कमल, ज़रूरत - जरूरत,